हिन्दी यात्रा एवं प्रवासी साहित्य में प्राकृतिक सौन्दर्य

डॉ. पारस जी चौधरी
एम.ए. बी.एड. एम.फिल पीएच.डी
१- वैभव पार्क सोसायटी
नागलपुर पाटिया हाईवे रोड, मेहसाणा

मानव आदि-अनादि काल से यात्रा करता आ रहा है। यात्रा का सामान्यतह भ्रमण-पर्यटन, यायावरी आदि नामों से पहचाना जाता है। यात्रा शब्द का अर्थ डॉ. हरदेव बाहरी के शब्दकोश के मतानुसार **"यात्रा सं. (स्त्री) १. एक स्थान से अन्य स्थान को जाना (जैसे-रेल द्वारा यात्रा, बस यात्रा) २. प्रस्थान, प्रयाण (जैसे-तीर्थयात्रा, रणयात्रा) ३. देव मंदिर को पूजन, दर्शन आदि के उदेश्य से जाना ४. व्यवहार (जैसे-जीवन यात्रा) ५. उत्सव (जैसे-राम लीला की यात्रा) प्रसंग (पु.) तीर्थयात्रा - भता हि. (पु.) यात्रा का खर्च - वर्णन (पु.) यात्रा का वृत्तांत - विमान (पु.) यात्री विमान - विवरण (पु.) यात्रा वर्णन"**[१] इस तरह मानव हंमेशा धुमक्कड ही रहा है। सामान्य शब्दों में की गई यात्रा के 'साहित्य अंकन' को यात्रा वृत्तांत कहा जा सकता है।

मानव जब घर में रह-रहकर बोर हो जाता है, तो हर मानव कि सामान्यतह आकांक्षा होती है कि वह घुमना चाहता है। उसे व्यवहारिक भाषा में भी यात्रा कहा जाता है। मानव प्रकृति यात्रा कभी ठहरा ही नहि है। वह सदा चलता रहा है। जब मानव देश की यात्रा लरके साहित्य अंकन करता है तो वह यात्रा साहित्य बन जाता है, लेकिन विदेशो में यात्रा करके साहित्य अंकन करता है तो वह प्रवासी साहित्य कहलाता है। विभिन्न मानव की विभिन्न साहित्यिक दृष्टि होती है। जब सामान्य मानव और साहित्यिक मानव यात्रा करता है तो उनके देखने का नजरिया भी विभिन्न होता है। सामान्य मानव सिर्फ मस्तिष्क की चित्तवृत्ति के आनंद के लिए पला करता है। जब साहित्यिक मानव यात्रा करता है तो वह प्राकृतिक दृश्यों की रम्यता व भव्यता, सौन्दर्य प्रेरणा, चेतना, कला, संस्कृति, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, कालक्रम, भाषाशैली, रहेन-सहन, विविध जीवन सन्दर्भों में खट्टे-मीठे अनुभवों का वर्णन यायावर में अभिव्यक्ति करके जन मानस तक पहुचाता है। ज्यादतर मानव पर्यटन स्थलो, विदेशीयात्रा, भगवान के स्थल, प्रादेशिक ऐतिहासिक स्थलों पे मन को तनाव से बदलने के लिए और आनंद को बढावा देने के लिए यात्रा या प्रवास करता है। विभिन्न यात्राएँ विभिन्न प्रकार की होती है। बालक उधानों एव बागों में खेलने खुदने के लिए, युवा-वर्ग चित्तवृत्ति के मानंद के लिए और बुजुर्ग धार्मिक स्थलों पे मन की शांति, शुकुन के लिए यात्राएँ करता है। जब साहित्यकार यात्रा के जरिए यात्रा में छिपे सौंदर्य, प्रेरणा, चेतना, जानकारी के लिए साहित्य के जरिए मानव तक पहुँचता है। प्रकृति के गोद में ही मानव का जन्म होता है। प्रकृति से मानव का गहरा संबंध है। इसी वजह से मानव मन में प्रकृति के प्रति गहन, प्रेम-

भाव, जिज्ञासा का सम्बन्ध होना स्वाभाविक है। मानव जाति के प्रति प्रेमभाव एवं प्रकृति के प्रति संवेदनशील का अनुभव कराती है। प्रकृति का अर्थ दो अर्थ में किया गया है भौतिक प्रकृति और मानव प्रकृति। भौतिक प्रकृति को दर्शनशास्त्र के प्रकृतिवादी सिद्धांत में सहवस्तु माना गया है। मानव प्रकृति के व्याख्या मनोविज्ञान करता है। विभिन्न साहित्यकारों ने यात्राओं से विभिन्न प्रकृति चित्रण किया है। व्यक्ति यात्रा में घुमता फिरता है तो चीजो का अवलोकन करता देखता है। जो विचार होता है उसे लिखावट करता है तो वह धीरे-धीरे साहित्य बन जाता है। मानव का जन्म प्रकृति के गोद में होने की वजह से वह सौंदर्य प्रकृति का प्रेमी है। मानव जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रकृति से कोई ना कोई प्रेरणा बोध लेता है। राहुल सांकृत्यान के मतानुसार - **"२१ बजे हम लोग खाना हुए। अब हम ल्हसावाली नदीकी बांदे शाखा के दाहने से चल रहे थे। यह धार तो पिछली धार से बहुत बडी है। खैरियत यही है कि इसे हमें पार नहीं करना होगा। इधर के पहाडों पर तो और भी अधिक झाड़ियां और हरियाली है। खेती के लायक ज़मीन होने पर भी खत देखने में नहीं आते। नदी के पार एक-आध जगह पहाड़ों पर चरती चमच्यिों के चलायमान काले दाग ज़रुर दिखलाई पडते थे। दो-एक जगह परित्यक ऊँचे घरों की पत्थर की दीवारें बतला रही थीं, किसी समय इधर सबसे अधिक बस्ती थी। नदी की उपत्यका काफी चौडी है। दो-तीन जगह हमें होर प्रान्तवाले मक्खन विक्रेताओं की लदी चमरिया, मिलीं। दो-तीन जगह तीर्थाटक भिखमंगे भी मिले। होर की दो-तीन तीर्थाटिकाओं के फोटो लेने का भी हमने प्रयत्न किया।"**[२] साहित्यकार प्रकृति का सजीव चित्रण करता है। पाठक को ऐसा लगता है कि साहित्यकार ने प्रकृति का चित्र हु-ब-हु सामने रखी हो ऐसा अनुभूति होती है। सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' के मतानुसार - **"रात सार्किट हाउस में विश्राम कर के प्रातःकाल यायावर जब बाहर टहलने निकला, तो विखरती धुन्ध से धनी हुई किरणों के प्रकाश में देखा, सूखी धरती पर कड़े जमे हुए कुहरे की पपडियों के बीच में उमगती हठीली नालों पर नरगिस फल रहे थे - सारा ढलान उन से छाया हुआ था और दूर पेड़ों के झुरमुट के भातर तक फूल ही फूल दीख रहे थे और उस के आग धुन्ध की दीवार। और उन की असंख्य चकित आँखे नीचे जमीन बर्फ को निहार रही थीं, मानो अपलक विस्मय से कि यह कठोर भूमि ही इस रुपथी की जननी है।"**[३]

हिन्दी साहित्य में यात्रा वृतान्त लिखने की प्रारंभ मतभेद है। लेकिन सरस्वती और गोविन्द पाण्डेय के मतानुसार - **"यात्रा वृतान्त लिखने की परम्परा का सुत्रपात भारतेन्दु से माना जाता है।"**[४] साहित्यकार की जैसी दृष्टि ऐसी प्रेरणा और विचार साहित्य में प्रकट होता है। यात्रा वृतान्त साहित्य में प्रकृति का चित्रण के बारे में डॉ.नगेन्द्र और डॉ.हरदयाल के मतानुसार - **"सत्यवती मलिक तथा यशपाल जैन की रचनाओं में प्राकृतिक सौंदर्य के नयनाभिराम चित्र शब्दबद्ध किये गये हैं। इन लेखकों की कृतियों में हिममंडित पर्वतमालाओं, सर्पीले पहाड़ी मार्गो तथा कलकल नाद करती नदियों का ऐसा सशक्त चित्रण किया गया है कि पाठक अपने हृदय में वहां पहुंचने की इच्छा संजोये बिना नहीं रह पाता।"**[५] आलोचकों ने इन वृतान्त को निबन्ध विद्या में शामिल यात्रा-साहित्य रचना में राहुल सांकृत्यायन कां - मेरी लद्दाख यात्रा (१९३९ ई.), किन्नर देश में (१९४८ ई.), रुस में २५ मांस (१९५२ ई.), रामधारी सिंह 'दिनकर' - देश-विदेश (१९५७ ई.),

मेरी यात्राएँ (१९७० ई.), मोहन राकेश-आखिरी चट्टान तक (१९५३ ई.), धर्मवीर भारती-यादे पोरप की (१९९६ ई.) साब्जा पत्र कथा कहे, बलराज साहनी - अप्रवासी की यात्राएँ (१९७२ ई.), डॉ.नगेन्द्र गाँधी के देश से (१९७३ ई.) लेनिन के देश में, कमलेश्वर - धुँध भरी सुखी (१९७९ ई.), दरख्तों के पार शाम (१९८० ई.), झुलती जडें (१९९० ई.) क्या हाल है चीन के (२००६ ई.) पश्चिमी जर्मनी पर उड़ती नजर (२००६ ई.) परतों के बीच (१९९७ ई.) कृष्णा सोवती-पैर, पहिये और पंख (२०१४ ई.), 'प्रवास' शब्द का अर्थ दीपक सो.ठाकर के मतानुसार - **"प्रवास (वि.) विदेश रहना, परदेश का निवास, परदेश। પરદેશ કે ત્યાં નિવાસ"**[६] विदेशगमन, विदेश यात्रा अतः किसी दूसरे देश में रहने वाला व्यक्ति प्रवासी है। आम तोर पर जब हम प्रवासी साहित्य की बात करते है तो तुरंत मस्तिक को अनुभूति होती है कि 'प्रवासी भारतीय दिवस' भारत सरकार के जरिए प्रतिवर्ष ९ जनवरी को मनाया जाता है। इस दिन महात्मा गांधी दक्षिण आफ्रिका से स्वदेश वापस आये थे। इसलिए इस दिवस को मनाने की शरुआत सन २००३ से हुई थी। प्रवासी भारतीय दिवस मनाने की संकल्पना लक्ष्मीमल सिंघवी ने की थी। इस दिन से भारत सरकार हर साल भारतीय प्रवासी दिवस मनाने की घोषणा की थी। नयी दिल्ली में पहला प्रवासी भारतीय दिवस ८-९ जनवरी २००३ को तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजित हुआ। उस दिन प्रवासी हिन्दी साहित्य के अंतर्गत कविताएँ, कहानियाँ, उपन्यास, एकांकी, नाटक, महाकाव्य, खंडकाव्य, अनुदित साहित्य, यात्रा वर्णन में जो घटना, कला, मूल्य, शिक्षा, अनुभवों आदि सृजन हुआ है। उसे प्रवासी भारतीय सम्मान प्रदान किया जाता है।

प्रवासी साहित्य शब्द उन लोगो के लिये प्रयुक्त होता है जो एक बेहतर जिंदगी की तलाश में अपना देश छोडकर दूसरे देशों में बस गए है। इन्ही के जरिए रचित साहित्य प्रवासी साहित्य कहलाता है। धीरे-धीरे जैसे-जैसे यात्रिकरण का विकास होता गया वैसे-वैसे साहित्य भी विभिन्न रुप से उभरता गया। भारतीय प्रवासी विदेशो में रहेंगे या भारत से दूर होकर भी साहित्य की माध्यम से बहुत निकट है। प्रवासी साहित्यकार का विदेश जैसे देश - ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, मोरिशस, सूरीनाम, औस्ट्रेलिया, जापान, लंडन, आफ्रिका देशों में रहकर प्रवासी हिन्दी साहित्य में साहित्य का सृजन करते है। साहित्यकार यात्रा के जरिए प्रकृति को मानवीकरण में पारदर्शी रुप में रमणीयता से लिखता है। सुषम बेदो के मतानुसार - **"आप अपना वक्त जाया कर रही हो, मिस। मेरी माँ कहती है हम लोग चाहे कितना ही पढ-लिख लें, कितने ही होशियार बन जाए.. हमारा जिस्म का रंग हंमेशा लोगों में नफरत ही जगाता रहेगा... हमारी नियति हमारी चमड़ी के रंग के शापित है।"**[७] यहा प्रकृति के रंग से मानवीकरण का उदाहरण नजर आता है। इसलिए प्रकृति मानवजीवन की मानव जीवन प्रकृति की विद्या है। विभिन्न काल, परिस्थितियों में विभिन्न साहित्यकारों ने विभिन्न प्रकृति चित्रण किया है।

प्रवासी साहित्य विशेष प्रकाशित साहित्य में किया है जैसे की अमेरिका प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों में - अंजना संधीर (१९६० ई.) - बारिशों की मौसम, धूप, छाँव और आँगन, इला प्रसाद (१९६० ई.) - धूप का

टुकडा, धनंजय कुमार (१९४९ ई.) - अँधरी बात, बर्फ की दीवार, लालाजी वर्मा (१९४१ ई.) वातायन सरकडों के बीच, उषा प्रियवंदा (१९३० ई.) - कहानी - वनवास, जिन्दगी और गुलाब के फूल, मेरी प्रिय कहानियाँ, उपन्यासों में पचपन खंभे लाल दीवार, अंतर्वशी, भया कबीर उदास, कनाडा प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों में हरिशंकर आदेश- अनुराग, महारानी दमयन्ती, ब्रिटन के प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों में - उषा राजे सक्सेना - मिट्टी की सुगंध, उषा वर्मा - सांझी कथा यात्रा की, कीर्ति चौधरी - खुले हुए आसमान के चीने, आदी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं द्वारा मूल्य, मिथक, इतिहास, सभ्यता, शिक्षा, कला, मूल्य से भारतीय को सुरक्षित रखा है। प्रकृति के बिना यह संसार चलना संभव ही नही नामुमकिन है। बिना प्रकृति का संसार चल नही सकता। मानव जीवन में प्रकृति का गहरा संबंध रहा है। मानव को जीवन देने में प्रकृति का बहुत बडा सर्वस्व माना है। बिना प्रकृति के मानव का जीने की उम्मीद करना नामुमकिन ही नहीं असंभव है। लेकिन दुःख की बात यह है कि जैसे-जैसे समय आधुनिकता, यांत्रिकरण, टेकनोलोजी, शहरीकरण की तरफ जा रहा है। वैसे ही प्रकृति चेतना नष्ट होती जा रही है। प्रकृति के नष्ट होने से सौंदर्य डुबता जा रहा है। इसलिए समकालीन यात्रा-प्रवासी साहित्यकारों ने साहित्य के जरिए प्रकृति की चेतना, संवर्धन लोगो तक पहुँचाया है। यात्रा और हिन्दी साहित्यकारों ने विदेशों में बसे हिन्दी की प्रभा को नई रोशनी दे रहे है।

संदर्भ सूचि

१. बाहरी, हरदेव शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश पृ.६८१
२. सांकृत्यान, राहुल मेरी तिब्बत यात्रा, पृ.२१
३. सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', अरे यायावर रहेगा याद, पृ.५०
४. पाण्डेय, सरस्वती गोविन्द पाण्डेय, हिन्दी भाषा एवं साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, पृ.३६५
५. नगेन्द्र, और हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ.८२४
६. ठाकर, दीपक सो. सुलभ हिन्दी, हिन्दी-गुजराती कोश, पृ.४६५
७. बेदी, सुषम चिड़िया और चील, पृ.१३७